भारतीय जनता पार्टी

तिरूवनन्तपुरम में संवाददाता सम्मेलन में श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा जारी वक्तव्य

13 अप्रैल, 2009

श्रीमती सोनिया गांधी का यह बयान कि ''हमें भारत में आ रहे विदेशी आतंकवादियों की अपेक्षा अपने ही देश के भीतर के लोगों से ज्यादा खतरा है'' खतरनाक और गैर–जिम्मेदाराना है। भारतीय जनता पार्टी इस निन्दात्मक वक्तव्य के लिए उनसे क्षमायाचना की मांग करती है।

''मेरा ध्यान कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा खूंटी झारखंड में 11 अप्रैल, 2009 को अपनी पार्टी के उम्मीदवार के समर्थन में आयोजित एक चुनावी रैली में दिए गए अत्यंत आपत्तिजनक भाषण की ओर दिलाया गया है।

दी स्टेट्समैन समाचार–पत्र में रिपोर्ट दी गई है :

खूंटी, 11 अप्रैल : कांग्रेस अध्यक्ष तथा रायबरेली से सांसद श्रीमती सोनिया गांधी ने खूंटी, झारखंड में आज एक चुनावी रैली में भारतीय जनता पार्टी पर अप्रत्यक्ष प्रहार किया लेकिन पार्टी का नाम लेते–लेते अचानक रूक गईं.......... '' **हमें भारत में घुस रहे विदेशी आतंकवादियों से ज्यादा अपने ही देश के भीतर के लोगों से अधिक खतरा है।** देश के भीतर ऐसे लोग हैं, जो हमेशा धर्म, जाति और वर्ग के आधार पर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं, भारत को आतंकवाद की अपेक्षा साम्प्रदायिकता से ज्यादा खतरा है। श्रीमती सोनिया गांधी ने कहा, जो पार्टियां देशप्रेम के मुखौटे पहनकर धर्म की संकुचित आड़ में जनता को बांटना चाहती है, वे ही देश को भीतर से खोखला कर रही हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया ने रिपोर्ट दी है :

''श्रीमती सोनिया गांधी ने किसी पार्टी अथवा नेता का नाम लिए बगैर कहा कि देश की कुछ राजनीतिक पार्टियां हिन्दुओं, मुसलमानों और ईसाइयों के नाम पर देश को बांटने की कोशिश कर रही हैं।'' उन्होंने कहा, ''इन लोगों ने देशभक्ति के मुखौटे पहन रखे हैं लेकिन वे तुच्छ राजनीति का लाभ उठाने के लिए वास्तव में राष्ट्र को कमजोर बनाने में लगे हुए हैं।'' उन्होंने आगे यह भी कहा कि **''देश को बाहर से आने वाले आतंकवादियों का उतना खतरा नहीं है जितना कि देश के भीतर के लोगों से।''**

मैं कांग्रेस अध्यक्ष की इस सोच से भौचक्का रह गया हूं कि ''हमें भारत में आने वाले विदेशी आतंकवादियों की अपेक्षा अपने देश के भीतर के लोगों से ज्यादा खतरा है।'' अथवा यह कि देश को बाहर से आने वाले आतंकवादियों से खतरा नहीं है बल्कि देश के भीतर से ही खतरा पैदा हो रहा है।''

मैंने सन् 1952 के प्रथम आम चुनावों से ही सभी कांग्रेस अध्यक्षों को देखा है। उनमें से किसी ने भी ऐसा नहीं कहा कि भारत की सुरक्षा को बाहरी लोगों से ज्यादा देश के भीतर से अधिक खतरा पैदा हो रहा है।

सन् 1980 के दशक के शुरू में भारत में आतंकवाद की शुरूआत से ही भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस और अन्य कई दलों सहित भारत के राजनीतिक वर्ग में इस बात पर व्यापक आम–सहमति थी कि इस खतरे का स्रोत सीमापार है और वास्तव में यह खतरा पाकिस्तान द्वारा '''प्रोक्सी वार'' के रूप में है। इस बात पर भी व्यापक सहमति थी कि पाकिस्तान ने आई.एस.आई. के माध्यम से भारत के विरूद्ध ''प्रोक्सी वार'' का सहारा लिया हुआ है क्योंकि यह सन् 1948, 1965 और 1971 के परम्परागत युद्धों के जरिए अपने उद्देश्य को पूरा करने में विफल रहा है। भारत के विभिन्न स्थानों पर बम–विस्फोटों के अलावा, पाकिस्तान में प्रशिक्षित आतंकवादियों द्वारा दो युद्ध जैसे आतंकवादी हमले किए गए जिनमें 13 दिसम्बर, 2001 को भारतीय संसद को निशाना बनाया गया और गतवर्ष 26 नवम्बर को मुम्बई में दो भयंकर आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दिया गया।

वास्तव में, 26 नवम्बर की आतंकवादी घटना के बाद मेरी पार्टी ने यूपीए सरकार को उस समय समर्थन दिया जब इसने वर्ष 2004 में पोटा को निरस्त करने के बाद काफी देर से दो आतंक–विरोधी विधान संसद में पेश किए। मैंने संसद में बोलते हुए कहा था कि भारत के सम्पूर्ण राजनीतिक वर्ग को अपने आंतरिक मतभेद भुलाकर बाहरी खतरे का मुकाबला करने में एकजुट होकर खड़ा होना चाहिए।

कोई भी राष्ट्रवादी भारतीय सीमापार आतंकवाद के खतरे को कभी भी कम महत्व नहीं देगा और यह नहीं कहेगा कि हमारे देश के भीतर के लोगों से ही ज्यादा खतरा पैदा हो रहा है। यह स्पष्ट है कि सोनियाजी इस सम्बन्ध में अपने वरिष्ठ पार्टी नेताओं की परम्परा से भी अनभिज्ञ हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री ने सन् 1962 तथा 1965 की लड़ाइयों के समय राष्ट्रीय प्रयासों में जनसंघ तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के योगदान की सराहना की थी। पंडित जी ने वास्तव में 1963 की गणतंत्र दिवस परेड़ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों को शामिल किया था।

हालांकि श्रीमती गांधी ने भारतीय जनता पार्टी का नाम नहीं लिया था लेकिन यह स्पष्ट है कि कांग्रेस अध्यक्ष न केवल हमारी देशभक्ति पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा करते हुए बल्कि एक गंभीर आरोप लगाते हुए भारतीय जनता पार्टी पर हमले कर रही थीं। **उन्हें इस निन्दात्मक वक्तव्य के लिए सार्वजनिक तौर पर माफी मांगनी चाहिए।** मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे इस मुद्दे पर बहस में हमारे साथ हिस्सा लेकर राष्ट्र को बताएं कि भारतीय जनता पार्टी बाहर से आने वाले आतंकवादियों की अपेक्षा भारत की सुरक्षा और एकता के लिए सबसे बड़ा खतरा पैदा कर रही है। भारत की जनता को फैसला करने दें।

यदि वे बहस में हिस्सा नहीं लेना चाहती हैं तो मैं उनसे आग्रह करता हूं कि वे इस तरह की गैर–जिम्मेदाराना बयानबाजी करने से बचें। मुझे याद आता है कि 2004 के संसदीय चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने तथाकथित ''कॉफिनगेट'' मुद्दा उछाला था और गंभीर आरोप लगाया था कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन सरकार ने भारतीय सेना के शहीदों के लिए ताबूतों की खरीद में पैसा बनाया। यूपीए सरकार अपने पांच वर्षों के कार्यकाल में इस आरोप को साबित नहीं कर पाई है।

***

कांग्रेस दूसरी पारी के कार्यकाल की नहीं बल्कि सबक सिखाए जाने की हकदार है। तीसरे और चौथे मोर्चे प्रासंगिक नहीं है; भाजपानीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन ही एकमात्र विकल्प है

अब से तीन दिनों बाद भारतीय मतदाता 15वीं लोकसभा चुनावों के पहले चरण के मतदान में हिस्सा लेंगे। अब से ठीक एक महीने बाद 13 मई को पांचवे और आखिरी चरण का मतदान पूरा होगा। दिन–प्रतिदिन यह साफ होता जा रहा है कि नई दिल्ली में अगली सरकार बनाने के लिए मुख्य मुकाबला भाजपानीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन (जोकि राष्ट्रीय स्तर पर एकमात्र चुनाव–पूर्व मजबूत गठबन्धन है) और कांग्रेस (जिसका अपना यूपीए गठबन्धन ही टूट गया है) के बीच है।

जहां तक तीसरे मोर्चा और चौथे मोर्चा के नेतृत्व में अगली सरकार बनाने का सम्बन्ध है, ये तथाकथित मोर्चे अप्रसांगिक हैं। वे अवसरवादी मंच हैं, जिनका न तो कोई साझा मंच है और न ही कोई साझा नेता। सीपीआई (एम) अपनी बढ़ती अप्रसांगिकता को छिपाने के लिए दोनों में सक्रिय होने की कोशिश कर रहा है। भारत की जनता जानती है कि तीसरे अथवा चौथे मोर्चे की सरकार देश के लिए खतरनाक होगी।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन और इसके विरोधियों के बीच कड़ा मुकाबला होगा। हमारे घ टक के सहयोगी दलों का किसी भी स्थान पर एक दूसरे से मुकाबला नहीं होगा। दूसरे शब्दों में, वे दल जो अभी भी यूपीए सरकार का हिस्सा बने हुए हैं, एक दूसरे के विरूद्ध चुनाव लड़ रहे हैं। किसी ने खुलकर कहा है कि डा0 मनमोहन सिंह कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार हैं न कि अन्य दलों के। इस गठबन्धन की कोई पार्टी तीसरे मोर्चे की पार्टियों के साथ चुनाव मंच में शामिल हो गई है।

यूपीए सरकार में इस तरह की अव्यवस्था पैदा हो गई है कि कांग्रेस अपने गठबंधन को एकजुट नहीं रख पाई है और यह विफलता मुख्यतः इसलिए है क्योंकि इसके सहयोगी दल सोचते हैं कि कांग्रेस भरोसा करने लायक पार्टी नहीं है।

कांग्रेस की दो तरीके से मजबूरी है। पहली, अनेक मोर्चों (मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, किसानों की दुर्दशा और आतंकवाद को रोकने में विफलता) पर यूपीए सरकार की विफलताओं और विश्वासघातों के कारण इस पर ''एंटी–इन्कम्बेंसी'' का भारी बोझ है। दूसरे, इसने अपने गठबन्धन के सहयोगी दलों का विश्वास खो दिया है।

पहली मजबूरी से कांग्रेस को देशभर की जनता के रोष का सामना करना पड़ रहा है। और दूसरी मजबूरी से कांग्रेस को अपने गठबन्धन की सहयोगी पार्टियों के अपने प्रति अविश्वास की भावना का सामना करना पड़ा है। देश में इस तरह की भावना पनप रही है कि कांग्रेस पार्टी दूसरे कार्यकाल में सत्ता में आने की बजाए सबक सिखाए जाने के लायक है।

इसलिए, मुझे यह पक्का यकीन है कि कांग्रेस की हार निश्चित है। केन्द्र में एक ऐसी सरकार जो **सुशासन, विकास** और **सुरक्षा** के सिद्धांतों के प्रति दृढ़–प्रतिज्ञ हो, बनाने के लिए मतदाता के समक्ष भाजपानीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन ही एकमात्र विकल्प है। मैं केरल सहित देश के सभी मतदाताओं से अपील करता हूं कि वे भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन में शामिल इसके सहयोगी दलों को स्पष्ट और निर्णायक जनादेश दें ताकि राष्ट्र के समक्ष खड़ी आंतरिक और बाह्य, दोनों चुनौतियों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए नई दिल्ली में एक सक्षम, सशक्त और स्थिर सरकार बन सके।